विजेता जागो प्रार्थना कैलेंडर-अक्टूबर 2023

1 प्रार्थना – “निरन्तर प्रार्थना करते रहो” (1 थिस 5:17)। हम "ऑनलाइन" रह सकते हैं; और सचेतन रूप से ईश्वर की उपस्थिति में, एक स्थायी रिश्ते में रह सकते हैं। हमारी विनतियों को उससे कह कर और उनके निर्देश को सुनने से परमेश्वर हमारे कदमों का मार्गदर्शन करेंगे। हाँ, दोस्त, आइए प्रार्थना को अपनी जीवनशैली बनाएं।

2. कृतज्ञता -"हर बात में धन्यवाद करो" (1थिस 5:18)। जब मैं आभारी होता हूं, तो मुझे मिले उपहार को स्वीकार करता हूं। जीवन की सभी परिस्थितियाँ ईश्वर के नियंत्रण में हैं और उनके प्रेम की अभिव्यक्ति हैं इसको जितना अधिक मैं समझूंगा कि, उतना ही अधिक मुझे सांत्वना मिलेगी और मैं आनन्द भी मना पाऊँगा।

3. धैर्य - "सब की ओर सहनशीलता दिखाओ" (1थिस 5:14बी) हम प्रतिसंस्कृति हो सकते हैं और बदला लेने की बजाय दूसरों के प्रति परमेश्वर के धैर्य को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। होने दें कि वही अनुग्रह, अच्छाई और सौम्यता जो प्रभु ने आपको प्रदान की है वह दूसरों के साथ आपके व्यवहार में प्रतिबिंबित हो।

4. कार्य-"यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए" (2 थिस 3:10)। भूख उस व्यक्ति के लिए एक अच्छी दवा हो सकती है जो काम करने से इनकार करता है। परमेश्वर ने हमें जो उपहार दिए हैं, उनके लिए हम जिम्मेदार हैं। जैसे ही हम अपनी इच्छा प्रभु को सौंपते हैं, वह हमें ऐसे कार्य करने में सक्षम करेगा जो उसका सम्मान करते हैं।

5. पवित्र किया जाना -“क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र ठहरो, कि तुम व्यभिचार से दूर रहो; आप में से प्रत्येक को अपने शरीर को पवित्र और सम्मानजनक तरीके से नियंत्रित करना सीखना चाहिए, न कि भावुक वासना में…” (1थिस 4:3-5)। हमारे विवाहों में परमेश्वर की पवित्रता, प्रेम और सामर्थ्य का प्रदर्शन होना चाहिए।

6. धन्य - "धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है और दिन-रात उस पर ध्यान करता है, ... जो कुछ वह करता है उसमें सफलता मिलती है" (भजन 1:1-3) प्रार्थना करें कि हमारे प्रभु आपको ऐसा मनुष्य बनने में मदद करें।

7. सहनशीलता- प्रभु सहनशील है... नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो, बल्कि यह चाहता है कि सभी को पश्चाताप करना चाहिए" (2पत 3:9)। परमेश्वर मनुष्यों को यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करते हुए देखने के लिए उत्सुक है। आज प्रार्थना करें कि आप हमेशा परमेश्वर की इच्छा को लोगों के साथ साझा करेंगे।

8. अनुसरण करें – यीशु कहते हैं: “मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मुझे उनके बारे में जानकारी है, और वे मेरा अनुसरण कर रहे हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं…” (यूहन्ना 10:27-28)। प्रार्थना करें कि आप हमेशा उसकी आवाज़ के प्रति चौकस रहें और जहाँ भी वह आपको ले जाए, यीशु का अनुसरण करें।

9. निर्माण करना - "इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो,..." (1थिस 5:11) मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। आज प्रार्थना करें कि हमारा प्रभु आपको अपने सेवक के रूप में उपयोग करे और आपको पवित्र आत्मा से भर दे ताकि आप अन्य लोगों को प्रेरित, प्रोत्साहित और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रेरित करने में मदद कर सकें।

10. धार्मिकता - "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तुम... धर्म का अनुसरण करो" (1तिमु 6:11)। पौलुस ने तीमुथियुस पर यीशु की धार्मिकता को अपने अंदर और उसके माध्यम से जीने की अनुमति देकर, सही जीवन, सही विकल्पों का अनुसरण करने के लिए निर्देशित किया। प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको भी ऐसे विकल्प चुनने में मदद करें जो उनके चरित्र को प्रतिबिंबित करें।

11. परमेश्वरत्व- "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू... भक्ति का पीछा कर" (1थिस 6:11)। परमेश्वरत्व का अर्थ है "ईश्वर-सदृशता"। हम परमेश्वर की छवि में बनाए गए हैं, लेकिन पाप ने इस छवि को धूमिल कर दिया है। प्रार्थना करें कि हम मनुष्य परमेश्वर की संतान के रूप में अपनी पहचान बनाए रखें, और परमेश्वर-भक्ति का "पीछा" करें।

12. विश्वास- "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तुम...विश्वास का पीछा करो" (1थिस 6:11)। विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है (इब्रानियों 11:6)। जब आप परमेश्वर के वचन में जानबूझकर समय बिताते हैं तो प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपके विश्वास को मजबूत करे और उसे आपके दिल और दिमाग में सच्चाई का संचार करने की अनुमति दे।

13. प्यार- "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू... प्रेम का पीछा करता है" (1थिस 6:11)। प्रेम सभी गुणों में सबसे महान है और परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करता है (रोम 13:8-10)। प्रार्थना करें कि हम मनुष्य के रूप में परमेश्वर की आत्मा से भर जाएँ, जिससे परमेश्वर का प्रेम उत्पन्न हो, न कि हमारा स्वयं निर्मित प्रेम।

14. सहनशक्ति और नम्रता - "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तुम... धीरज और नम्रता का पीछा करो" (1 थिस 6:11)। हम लोगों के लिए प्रार्थना करें कि हम प्रलोभन के दबाव में न आएं, बल्कि दृढ़ रहें, लेकिन नम्र रहें, मसीह का धैर्य दिखाएं।

15. परमेश्वर का रास्ता - "प्रिय परमेश्वर, मैंने अपनी समस्याओं को ठीक करने और अपने जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश की है, लेकिन यह कभी काम नहीं आया। अब मैं जानता हूं कि मेरी एकमात्र आशा आप ही हैं, प्रभु। मैं आपके अनुग्रहकारी उद्धार के अद्भुत उपहार के लिए आभारी हूं। आपका मार्ग हमेशा विश्वास के माध्यम से अनुग्रह का मार्ग है। मुझे विश्वास करने और प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें ताकि मैं आपके मार्ग पर चल सकूँ। (इफि. 2:8)

16. परमेश्वर की हस्तकला - "हे परमेश्वर, अब मुझे एहसास हुआ कि मैं आपकी उत्कृष्ट कृति हूं। मसीह में मुझे अपनी कीमती रचना बनाने के लिए धन्यवाद। आप चाहते थे कि मैं अच्छे जीवन का अनुभव करूँ। इसलिए, आपने मसीह के साथ मेरे मिलन के माध्यम से मेरे लिए अच्छे कार्यों में चलना संभव बनाया। कृपया मेरे माध्यम से अपने अच्छे कार्य पूरा करें।" (इफि. 2:10)

17. आशीष देने के लिए आशीषित होना - "प्रिय परमेश्वर, मुझे नहीं पता था कि मैं वास्तव में कितना धन्य हूं जब तक मुझे पता नहीं चला कि आपने मसीह में मेरे लिए क्या किया है। आपने मुझे मसीह में वह सब कुछ दिया है जिसकी मुझे आवश्यकता है। मैं तेरे प्रचुर प्रावधानों से परिपूर्ण और भरपूर हूँ। मुझे आशीष देने के लिए धन्यवाद ताकि मैं एक आशीष बन सकूं!" (उत 12:1-4)

18. रहस्य - "प्रिय परमेश्वर, मैंने सफल होने के लिए बहुत कोशिश की है, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि सच्ची सफलता का रहस्य यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है। अब जब मैंने मसीह को प्राप्त कर लिया है, तो सच्ची सफलता का स्रोत मुझमें रहता है। इसलिए, मैं मसीह के साथ सह-सूली पर चढ़ने और सह-पुनरुत्थान को स्वीकार करता हूं। धन्यवाद परमेश्वर!" (गलातियों 2:20)

19. आज का जीवन- "प्रिय परमेश्वर, मैंने एक बार सोचा था कि मुझे मरने तक इंतजार करना होगा और वास्तव में जीवित रहने से पहले मैं स्वर्ग चला गया। लेकिन प्रेरित पौलुस ने कहा कि वह अभी जी रहा है।

मैं देखता हूं कि यीशु मसीह मुझमें हैं जो मुझे अब जीने में सक्षम बनाते हैं। प्रभु यीशु, आपका धन्यवाद, कि अब मैं सच्चे जीवन का अनुभव कर रहा हूँ जैसे आप जीवन जी रहे हैं!" (गलातियों 2:20)

20. राष्ट्र के लिए प्रार्थना – "हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से, मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मनुष्यों के मामलों में शासन करें और रद्द करें, और हमें चरित्र, दृढ़ विश्वास और प्रतिबद्धता के अगुवे प्रदान करें! इस देश के नागरिकों को देश के कानूनों का सम्मान और पालन करने के लिए प्रेरित करें ताकि हम एक शांतिपूर्ण, समृद्ध समाज में रह सकें। (भजन 33:12)

21.विकल्प - हर दिन हमें निर्णय लेने होते हैं। पुरुष होने के नाते यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने परिवार का नेतृत्व करें और अपनी स्वाभाविक आवेगशीलता को अस्वीकार करते हुए प्रभु के वचन के अनुसार निर्णय लें। प्रभु, कृपया पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करने में मेरी सहायता करें। (गलातियों 6.8,9)

22. प्राथमिकताएँ -कभी-कभी हमारे अस्तित्व के सबसे नकारात्मक रूप, जैसे स्वार्थ, क्रोध, ईर्ष्या, प्रकट होते हैं। बाइबल इन्हें "शरीर के काम" कहती है (गलातियों 5.20)। परमेश्वर मेरी प्रार्थना है कि मैं परिवार में दूसरों की जरूरतों को अपनी प्राथमिकताओं से पहले रखने में सक्षम हो सकूं और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की अनुमति दे सकूं।

23. मानक - बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि हमें "सांसारिक तौर-तरीकों" के अनुरूप नहीं होना चाहिए (रोम 12:2)। हम शांति के नाम पर, वैवाहिक जीवन और बच्चे के पालन-पोषण के लिए बाइबिल के मानकों को छोड़ने का जोखिम उठाते हैं। परिवार की स्थिरता को खतरे में डालने वाले कई प्रलोभनों और जालों के बीच साहस और दृढ़ता के लिए प्रार्थना करें।

24. क्षमा- जैसे एक दीवार अलगाव का कारण बनती है, उसी को बाइबल अनजाने पाप का परिणाम मानती है (यशायाह 59.2)। अनजाने और माफ न किए गए पापों के कारण पति-पत्नी के साथ-साथ माता-पिता और बच्चों के बीच भी रिश्ते टूट सकते हैं। पाप के कारण हुए घावों के उपचार और रिश्तों की बहाली के लिए प्रार्थना करें।

25. मित्रता - "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!" (भजन 1:1)। एक पिता की मित्रता उसके बच्चों को उसके चरित्र के बारे में बहुत कुछ बताती है। प्रार्थना करें कि आपकी मित्रता आपके बच्चों को प्रभु के साथ चलने में बाधा न बने!

26. गरिमा - "धर्मी का परिश्रम जीवन के लिये होता है, परन्तु दुष्ट के लाभ से पाप होता है।" (नीति. 10:16) वह स्थान जहां हम काम करते हैं वह एक मिशन क्षेत्र है। आइए हम मसीही पुरुषों के लिए मध्यस्तता करें, ताकि वे परिश्रमपूर्वक कार्य करके और अपने परिवारों का भरण-पोषण करने में सक्षम होकर अपने काम के माध्यम से प्रभु का सम्मान कर सकें।

27. एक भाई - यीशु के आस्तिक और अनुयायी के रूप में आप उनके भाई बन गए हैं। आप परमेश्वर की आत्मा से पैदा हुए थे। आपको मसीह में विश्वास के माध्यम से अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए दूसरों को आमंत्रित करने का विशेषाधिकार दिया गया है। परमेश्वर के अवर्णनीय उपहार के लिए उसकी स्तुति करो (यूहन्ना 1:12)।

28. एक बड़ा विशेषाधिकार-आपको दूसरों को यीशु के बारे में बताना कभी भी बोझ नहीं समझना चाहिए। मित्रों, परिवार और अन्य लोगों को उसकी उपस्थिति में आमंत्रित करने की अनुमति पाना एक इंसान को दिया जाने वाला सबसे बड़ा विशेषाधिकार है (भजन 96:2-3)।

29. हमेशा समय पर - बाइबल हमें बताती है कि सब कुछ समय के पूरा होने पर होता है। यह यीशु की वापसी के संबंध में भी सच है। प्रार्थना करें कि जब वह वापस आये तो आप तैयार रहें, और आपके जीवन और सेवा के फल के साथ-साथ कई अन्य भी तैयार हों (रोमि 1:14)।

30. बिना आशा के - यीशु के स्वर्ग में चढ़ने के लगभग 2000 साल बाद, संपूर्ण जातीय समूह अभी भी आध्यात्मिक अंधकार में जी रहे हैं - परमेश्वर के बिना और अनंत काल की आशा के बिना (इफि 2:12)। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको दिखाए कि आप कैसे बदलाव ला सकते हैं।

31. "जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ" (1कुर 16:13) चूँकि अंदर से सांसारिकता और बाहर से उत्पीड़न चर्च की नींव को खतरे में डालता है, आप, परमेश्वर के जन, को मजबूत खड़े होने के लिए बुलाया जाता है। ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जाने के लिए प्रार्थना करें जो यीशु के साथ रहा है और जो उनके चरित्र को दर्शाता है।